

ASIA ARCHIVES

2067

ACJA ARCHIVES

*ms
Notes*

2067	I
------	---

शक्तेश्वर ॥ पादयो ॥ रंकीलकाय २ सर्वेश्वर ॥ मम सर्वा
 र्थसाधने विनियोगः ॥ श्रीं अस्त्राय पुरुषाय ॥
 ॥ धर्माय २ कंठे ॥ जानाया २ जवरव ॥ वैराजाय ॥ त्व
 वर्ये ॥ ऐश्वर्याय २ त्वगल ॥ अधर्माय ॥ सुतु ॥ अज्ञाना
 य २ अववववव ॥ अवैराजाय २ अवववव ॥ अनैश्वर्या
 य २ हृदये ॥ ॥ अर्घपात्रात्मपूजा स्वस्ववेदेन स्वस्वराच
 नं कारयेत् ॥ ॥ मो नीपय नीत्पुन्यसामुमान ॥ ॥
 वृत्तिजनेना चम्यसूर्यार्चवाक्य ॥ अग्ने अमुकगोत्रा मुकना
 मध्ये यां नीयथाश्रुतिस्मृतपुत्रा नीत्पुन्यसामुमान ॥
 न धान्यादिर न सुवर्णाद्यक धातु सर्वसंपत्ति सिद्धि
 य प्राप्ति आ पुत्रोत्पत्ति संतति संतान वृद्धि काम नार्थ की

श्रीं अस्त्राय पुरुषाय ॥
 धर्माय २ कंठे ॥ जानाया २ जवरव ॥ वैराजाय ॥ त्व
 वर्ये ॥ ऐश्वर्याय २ त्वगल ॥ अधर्माय ॥ सुतु ॥ अज्ञाना
 य २ अववववव ॥ अवैराजाय २ अवववव ॥ अनैश्वर्या
 य २ हृदये ॥ ॥ अर्घपात्रात्मपूजा स्वस्ववेदेन स्वस्वराच
 नं कारयेत् ॥ ॥ मो नीपय नीत्पुन्यसामुमान ॥ ॥

जागवृत्तकर्तुं श्रीं सूर्यार्चयेत् ॥ गृह नस्कार अर्घपात्रात्म
 पूजा ॥ ॥ ततो लक्ष्मी मंडल पूजा ॥ ॐ वि प्रेशाय ॥ ल
 क्ष्मै ॥ शंखनिधने रपय निधने र देहल्यै रजयाय २ वि
 जयाय २ श्रीं कृष्णायै २ बलायै २ प्रबलायै २ बराहाय २
 धात्रे २ विधात्रे २ कपिलाय २ विष्णवे नाय २ नरसिंहा
 य २ गुरुभ्यो २ ॥ आवाहनादि ॥ ॥ कलश पूजा ॥ ॐ आ धा
 शक्त्यै २ वृषाशनाय २ संपूर्णा कलशाय नमः नृत्पुंजय
 य २ गंगार्यै २ यमुनाय २ सास्वत्यै २ सप्तर्षि २ धन्यै २ सप्त
 कोमिके २ सप्तसुद्रायै २ सप्तसागरेभ्यो २ अक्षकुलि
 नागेभ्यो २ मासादि पक्षेभ्यो २ तिथिभ्यो २ नक्षत्रेभ्यो २ ॥

योगेभ्योऽवारेभ्योऽकरणेभ्योऽमुहर्तेभ्योऽराशीभ्योऽसं
वत्सरेभ्योऽईन्द्रादिदशलोकपालेभ्योऽआदिपादिनवग्र
हेभ्योऽअश्वत्थामादिअष्टचिह्ने जीवेभ्योऽआवाहनादि
तुष्टु ॥ तिरुमूः हेम ॥ श्रीपैः लक्ष्मी ॥ आवाहनादि तुष्टु
वाङ् ॥ ॥ स्वजोनपूजा ॥ अस्वरथास्त्रेऽवलयेऽव्यासाय
॥ रुतमत्ताय ॥ विभीषताय ॥ रुपाचार्या ॥ पञ्चरात्रमा
य ॥ मार्कण्डेयाय ॥ दधिउमापतये ॥ आवाः तुष्टु ॥ ॥
पंचवलिपू ॥ स्वस्थानक्षत्रपालेभ्योऽअसीतांगभैर
वाय ॥ रुतः ॥ चराड ॥ कीच ॥ अन्ध ॥ कपालीश ॥ भीष
रा ॥ संहारा ॥ आवाः ॥ हाङ् ॥ गणेश ॥ गणपतये ॥ विष्टे

भवाय ॥ लम्बोदराय ॥ हेरम्बाय ॥ गजाननाय ॥ सुखास
नाय ॥ ॥ रुतुताय ॥ उन्नप ॥ वाससिद्धिदिनायकाय ॥ आवाः
तुष्टु ॥ गोग्राम ॥ नन्दायै ॥ भद्रायै ॥ सुमनसे ॥ रुशीलायै ॥
सुभद्रायै ॥ सुभगोमातृकायै ॥ पंचजामातृकायै ॥ आवाः हा
ङ् ॥ कौमारी ॥ ब्रह्मा-यादिअष्टमातृकाभ्योऽपराशक्त
ये ॥ मयूरावाहनायै ॥ कौमारिभूतये ॥ आवाः हाङ् ॥
पंचाय ॥ पूजा ॥ श्रीसूर्यय ॥ नारायणाय ॥ शदा ॥ मृष्ट ॥ अ
घो ॥ पञ्चप ॥ गह्वरा ॥ संकर ॥ मर्त्य ॥ अ ॥ इत्ये ॥ अ ॥ इत्ये ॥
स्वेष्टदे ॥ वरुणा-नगराजेभ्योऽआवाः पाञ्चका ॥ ॥
महादेवपूजा ॥ आध्याशक्तये ॥ वृषासनाय ॥ ॥ ध्यान

मृग तंका भयंरं मुंल व्याघ्रां जिनां वरं ॥ चंद्र चूड विनेत्र
 वपं च वक्र शिवं भजे ॥ **ध्यान पुष्प २ ॥** सदा शिवाय ॥
 एकदशैवे न्यो ॥ **आवा नुयु ॥** ॥ अन्न पूजा ॥ आचार
 शक्तये ॥ **ध्यान ॥** ध्याये हं पार्वतीं देवीं दिभुजां चारुहा
 सिनीं ॥ श्वेतवर्णां महाती प्रां अन्न पूरां भजाम्यहं ॥ मा
 हे श्वरी माहा माये अनं डानर ते नद्ये ॥ विचित्रवर्शने डे
 वी चंद्र चूडे नमस्तुते ॥ **ध्यान पुष्प २ ॥** ॐ नमो भगवती
 माहे श्वरी अन्न पूराये ॥ **आवा नुयु ॥** ॥ उग्र चंडा
 पूजा ॥ **आधार शक्तये २** महिषासनाय २ सिंह सनाय २
 ॥ **ध्यान ॥** अष्टादश भुजो पीता पीतवक्षस्तनोरुहां ॥
 कपालं फेन कपाशं दप्यं नतर्जनीं धनुं ॥ **ध्यान उमरुक्**

सास्त्रं वाम हस्तो प्रविभ्रतीं ॥ शक्तिं च मुकुं शूलं खड्गं च
 सारं कुशं ॥ वज्रं जन सलाकां च वक्रं चैव नुड क्षिप्तो ॥
 सूर्य कोटि सहस्राभां नानाभरणभूषितां ॥ देवीं सर्वा
 शासत्तं स सर्वकामफलप्रदां ॥ अभिष्ट फलं दं श्रीमा
 नमहिष सिंहस्योपरि ॥ ॐ जय गिरिनडिनी विश्वेश्वरी
 महिषमर्दिनी परमेश्वरी भगवती नमः ॥ **आवा नु**
यु ॥ ॥ नारी केल जल पूजा ॥ **आधार शक्तये २** नारी
 केलामृताय २ सर्वा मृताय २ **आवा नुयु ॥** ॥ **कुवैर पू**
जा ॥ **आधार शक्तये २** अश्वत्थनाय २ ॥ **ध्यान ॥** पीत
 वर्णा चतुर्बाहुं चारुपिंगललोचनं ॥ मुकुतेः पुंड्रलेः सो
 भासताभिराभूषिता ॥ दंडिचिवेगधारि चतुर्वर्च

हारभूषितं ॥ मुलेदुदुदयोपेतं शंभू नलि विभूषितं
 ॥ गङ्गाशक्तिचरं देवं दक्षहस्ते नये ननु ॥ वामपृष्ठगतो
 देवमेकहस्ते सुवर्णचक्र ॥ वामोत्तंगतया भार्याशु
 भद्रादिभुजा तथा ॥ रत्नपात्रकरा चैव मेकदेवा गलि
 गता ॥ सिंहस्थो वरदे देव धनधान्यादिसंपदा ॥ ६ ॥
 कुरारूपधने साध्या येन तस्य सर्वा धर्मसिद्धिर्दृष्ट ॥ ॥ ७ ॥
 य २ ॥ धनदायै २ शुभद्रायै २ यं क्षिणी सहिताय २
 ॥ आवा ॥ ३ ॥ विष्णुपूजा ॥ आचारशक्तये २ गङ्गास
 नाय २ ॥ ध्यानं ॥ शतखचक्रसकिरि ॥ केशवाय २ ॥ नारा
 यणाय २ माधवाय २ गोविंदाय २ विष्णवे २ सद्गुदनाय २ दा
 मोदराय २ त्रिविक्रमाय २ वामनाय २ श्रीधराय २ हषिके

धाय २ पद्मनाभाय २ पुष्पोत्तमाय २ आवा ॥ ८ ॥ ॥
 मूलमहालक्ष्मीपूजा ॥ आवाहनं ॥ महापद्मवर्ता तस्थे
 कारणां तं तविग्रहे ॥ सर्वभूतहिते मातरे ॥ ऐहिके परमेश्वरी ॥
 ॥ देवेति भक्तिः ॥ आसनं ॥ अमूल्यरत्नसारं च निर्मितं
 विश्वकर्माणा ॥ आसनं च विचित्रं च महालक्ष्मीप्रतिगृह्य
 ता ॥ आसनपूजा ॥ आचारशक्तये २ कूर्मासनाय २ अ
 नन्तासनाय २ वराहाय २ पृथिव्यै २ क्षीरासिधुवे २ श्वेतरव
 दीपाय २ शशिमण्डलाय २ कल्पवृक्षाय २ मणिवेदिका
 य २ रत्नसिंहासनाय २ चर्माय २ ज्ञानाय २ वैराज्ञाय २ ऐ
 श्वर्याय २ अवैराज्ञाय २ अनेश्वर्याय २ विभूतये २ उन्नतये
 २ कीर्तये २ श्रद्धये २ कीर्तये २ मृतये २ ध्यतेये २ उत्कृतेये २ नृधये २
 पद्मायै २ ॥ ध्यानं पाणिजानपुष्पेन ॥ १६ ॥ दिने चैकं दृष्टुं पुष्पे

न ॥ ॐ कां न्या कां च न सं नि भां हि म गी रिं पु क्षे श्रु त भि र्ग जै
ह स्तो क्षि प्र हि रा प या मृ त द्य ते रा शि ह्यु मा नां श्रि यं ॥ वि भ्रा
ण व र म् पु ग्ग म म भ यं ह तैः कि रि दि ज्व लां क्षो मा व द्वा नि
तं वा विं व ल लि तां व न्दे र वि न्द स्थि तां ॥ **व्या न पु० ॥** रि स्थ
र पू जा ॥ ॐ न मो भ ग व ती श्री म न्म हा ल क्ष्मी दे व्या इ हा ग
छ इ ह ति व इ ह सं नि रु चो भ व या व त्पू जां क री मि ता व त्वं
सु रि थि रो भ वः ॥ **प्रा रा प्र ति द्वा ॥** ॐ ओं हूं कों श्री म न्म हा ल
क्ष्मी दे व्या सर्वे दि या नि इ हा ग त्पु सु र्वं च री ति पृं तु त्वा हा ॥
श्रीं स्वा हा १०८ ॥ **ने नु प ज मु द्रा ॥** ॥ **प्रा र्थ ना ॥** त्वं दे वी
पर मे शा नी सर्व संप ति दा यी नी ॥ ए ह्ये हि मं इ ले चा त्र ति
वृ त्तां पू ज या म्य हं ॥ ॥ **पा र्थ ॥** ग न्धा दि स लिल ला धा र ती

थं मं जा भि मं त्रि ता ॥ दू र या त्रा स न फ ल पा पं त त्पु ति गृ ह्य
तां ॥ ॥ **अ र्घ्य ॥** उ र्वी क्षे त ज वा यु क्तै ग न्ध च न च र्चि तं ॥ व
नु र्व र्ग फ लं वा पि गृ ह्ना ना र्घं ह रि प्रि ये ॥ ॥ **स्नानं ॥** स्नानं तु
भ्यं म या द त्तं ल क्ष्मी स त्ता न कां म्य या ॥ लो क सा त र्ज गं ना
थं स लिलै र्गं ध संपु ते ॥ ॥ **पंचा मृत ॥** गो क्षी र दू धि क्षी
रं च घृ त स न्धि स म न्वि तं ॥ म हा पा प वि ना शार्थं स्नाना
र्थं पु ति गृ ह्य तां ॥ ॥ **आ च म न ॥** सु वा सि त ज लं स
ओ उः कू लै र्प रि स्तो धि तं ॥ गृ ह्य तां च म नी या त्वं गृ ह्ना न
ह रि व त्र मे ॥ ॥ **सु ग न्ध नै र्ग ॥** सु ग न्धी पु ष्या तै र्ग च सु र्ग
धाम ल की फ लं ॥ दे ह सो द र्य वी र्जं च गृ ह्य तां श्री ह रि प्रि ये ॥
॥ ॥ **वस्त्र ॥** वस्त्रं ना ना वि र्धं दि व्य दे वा मा दि स म न्वी तं ॥ इ

दं वासो गृहान त्वं पीनां म्वर धर प्रीय ॥ वंदनं ॥ ॥ श्री खंड चंद
 दिव्यं धाढ्यं सुमनोहरं ॥ विलेपनं मया दत्तं तुभ्यं देवी नमो
 नमः ॥ सिंदूर ॥ ॥ सिंदूरः श्रिय संपत्ति तिलकं शत्रु नाशनं
 ॥ ललाट भूषणं देवी गृह्यतां मखि पुत्रिके ॥ ॥ अक्षतं यव
 निल ॥ अक्षतं अर्थ का ॥ ॥ यज्ञोपवीतं ॥ कर्पाशक
 ल्पितं सूत्रं सुधीर्तां जगृणीकृतं ॥ गृह्यतां विष्णु कान्ते च दू
 क्रिभाव कर्तुं मया ॥ ॥ मात्स्यान ॥ पीतजाति तु पुष्पा
 नि नाना वर्णेनितो जितं ॥ श्री लक्ष्मी प्रीतये तुभ्यं कोटिग
 राफलं लभेत् ॥ ॥ दुर्वा ॥ पीतकाति तु पुष्पा र्थं विजयाय
 च ॥ निर्वृते वत्तु यो दद्यात्स ततं कर्म मा पुयात् ॥ संख्या स
 तसहस्रान्निवृत्ति पुष्पा नियानि तु ॥ तस्या दुर्धर्षा निचो दे
 ति सै भया नित धे वच ॥ दुर्वा पुष्पां जलीं कृत्वा पीतजाति
 मे माय ४

समं च तां ॥ आराधयानि देवे भिवां छासि द्वि च देहि मे ॥ ॥
 मात्स्यान ॥ नाना पुष्प सुगंधा निलक्ष्मी कोटिगृह्यतां ॥
 प्रीयतां लक्ष्मी वृद्धि र्थं कोटिगृह्यतां फलं लभेत् ॥ ॥ यद्यं ॥
 पक्षं शरसि सजातं नाएय राप्रिये न च ॥ मया निवेदितं भ
 त्या प्रसीद परमेश्वरी ॥ ॥ उत्पलं ॥ उत्पलं च शुभं नित्यं
 भातय राशिर शुभं ॥ आज्ञानं कर्म पुष्टिं च गृह्यतां मोक्ष
 संगतिं ॥ ॥ दसनं ॥ कंदर्प भस्म सजातं य वित्रं दसनं शुभं
 ॥ गृह्यतां परमेशानि आरोग्य सर्व कामदं ॥ ॥ मात्स्या
 न ॥ कुमुदादि निपुष्पा नि नाना वर्ता मनोहरं ॥ गृहान पर
 मेसा निद्रि दरा परमेश्वरी ॥ ॥ लक्ष्मी त्वां ॥ लक्ष्मी पु
 ष्पां पुष्पा सारं तव प्रीति करं मया ॥ गृहान लोक मातुं वै प्र
 शन्नो भव सदा ॥ ॥ वैष्णव ॥ त्रिदलं त्रिगुण कार

विल्वपत्रं मनोहरं ॥ मयानिर्वेदितं भक्त्या गृहानविष्णुव-
 ॥ ॥ जी स्वां ॥ जानिना मपि सर्वासां शुक्लजानी प्रशस्तं ॥
 जानी पुष्पप्रदानेन गं-वर्षैः सह मोदते ॥ ॥ तुलशी ॥ तुलशी
 पुष्पसारा च वृद्धा श्रीहरिवत्सभा ॥ तेन दानेन नंदवे शिभुक्तिभुक्ति
 प्रवर्द्धनम् ॥ ॥ अनेक रंगारद पर्यगादि ॥ रत्नस्वरा विकारं
 च देहभूविषा विवर्द्धनं ॥ सोभाये श्रीकरं रत्नभूषणं देविगृ-
 ह्यतां ॥ अंजनं कंकटिश्चैव शिरोनेत्रादिभूषणं ॥ गृहानवरदे-
 लक्ष्मीनवार्थे कल्पयाम्यहं ॥ ॥ त्रयांजलिः ॥ ॥ जेजे परमेश्व-
 रीकमलंकष लेश्वरीकमलमोहमहालक्ष्मीराज्यं मे वरदे स्वा-
 हा ॥ ३ ॥ पडंग ॥ आवा ॥ ॥ धूप ॥ धूपोयं गृह्यतां देवीना-
 नागन्धसमन्वितं ॥ घ्राणसमर्पय लक्ष्मीदारिद्रादिपुष्पा-

दिनी ॥ ॥ दीप ॥ आज्येन वृत्तिकायुक्तं ज्योतिरेव लोकादी-
 पकं ॥ गृह्यतां दीपमाख्यातं मन्त्रकारान्तकारकं ॥ ॥ कर्पूर
 ॥ कर्पूरं रुतिरं देवी गृहातो मनसु पूजिते ॥ गंधपुष्पचिदासा-
 निषीयतां कमलासिते ॥ ॥ नैवेद्यं ॥ नैवेद्यं षडशोपेतं पाय-
 सं धृतशर्करो गृहानजगतां मानरिप्सितार्थं प्रदेहि मे ॥ ॥
 पक्वान्नं ॥ तस्य चूर्णे द्रुवं पक्वं स्वास्ति कादिसमन्वितं ॥ म-
 यानिर्वेदितं भक्त्या पक्वान्नं पुति गृह्यतां ॥ ॥ फलं ॥ फलं
 च विविधाकारं डाडीमिमानुलिंगकं ॥ कदलीफलसं-
 युक्तं गृहाराहरवत्सने ॥ ॥ ताम्बूलं ॥ ताम्बूलं च वरं
 रम्यं कर्पूरादि सुवासितं ॥ जिह्वाजामहेदकरं ताम्बूलं पु-
 ति गृह्यतां ॥ आचमनं ॥ ॥ पुरापतीर्थोदकं चैव विशु-



I

690c

1810

सगला

सोपथी



शिव अजमान



नाक रते पादि



शंख



अंशु

संघ



अधिकारी गेज

तेगीनतियाव चौकं वैजया गुलो ॥ गंगाजल १ पूजाभू
 ता य १ अंशु १ पंचपक्ष २ स्थानमा १ अंशु
 पोताय १ तिल १ मोसिको १ मतादि १ जलपात्र
 यजमका १ स्थान १ कित १ समोदि १ १ ललाट १
 नदि १ फल १ तीर्थडा १ उपोस १ विजय

पंचांग न ५ पंचगव्य ५ पंचपत्रव ५ पंचरत्न ॥
 कंसपात्र १ घृत १ लुक्त १ शंखिजगीहल

अंशुद्विदं सदा कृत्यं कृत्यं कृत्यं कृत्यं च मनीयकं ॥ ततो
 आभरता पूजा ॥ पूर्वदले ॥ अंशुभगवते वासुदेवाय न
 मः ॥ शंकराय १ पद्मनाभाय १ अनिरुद्धाय १ ॥ आग्रे ॥
 दमकाय १ शालिलाय १ गुराय १ रक्तकंठाय १ ॥ जव ॥
 शंखनिधिदधितभ्यां १ रव ॥ पद्मनिनिदीर्घताभ्यां
 २ ॥ दला ॥ ॥ वलाके १ विमलाके १ कोमलाये १ रव
 नमालिकाये १ विभीषणाये १ मातिकाये १ शंकर्यै १ रव
 सुमालिकाये १ इन्द्राय १ इति १० ॥ धो न पिरो ॥ वज्रा
 ये १ शक्तये १ दंदाय १ खड्गाय १ पाशाय १ अंकुशाय १ श

जय २ श्रुलाय २ वक्राय २ पद्माय २ ॥ सद्ये ॥ श्रीये २ लक्ष्मी २
पद्मायै २ पद्मलयायै २ कमलायै २ हरिप्रीयायै २ इन्द्र
रायै २ लोकमात्रे २ मायायै २ क्षीराब्धितनये २ रमायै २
चनदायै २ धान्यदायै २ लक्ष्मीभ्यां २ वागीश्वरस्वती
भ्यां २ काशिकाभ्यां २ कीर्त्याकांताभ्यां २ सांतादांताभ्यां
२ चरितोविधृतिभ्यां २ इच्छा २ अतिइच्छाभ्यां २ प्रीति २ अ
तिप्रीतिभ्यां २ रतिधृतिभ्यां २ मायासोहित्र्यां २ श्रीमृता
धर्मदाभ्यां २ महिमासतिभ्यां २ जयायै २ विजयायै २ अजिता
यै २ अपराजितायै २ जमिने २ स्तोत्रिने २ मोहिने २ भा
कर्षने २ ॥ वज्र ॥ द्वारे ॥ शत्रुपात्नाय २ वज्रकाय २ जगता
पतये २ योगिने २ ॥ निवृत्ते ॥ सत्संगराय २ रजोगराय

य २ तमोगराय २ ॥ बोधरादले ॥ सर्वलक्ष्मीदेव्यै २ वि
श्वलक्ष्मीदेव्यै २ भुवनल २ राजपल २ मंडलल २
गहल २ धनल २ धान्य २ संतान २ जय २ खड्ग २
बुद्धि २ धृति २ ज्ञान २ मोक्ष २ महा २ ॥ अष्टदले ॥
अनिमासिद्धे २ लक्ष्मासिद्धे २ महिमासिद्धे २ प्रा
प्तिसिद्धे २ इति त्वसिद्धे २ वसित्वसिद्धे २ सर्वकाम
सिद्धे २ प्राकाम्यसिद्धे २ ॥ चकारो ॥ पूर्णाश्वीदेव्यै २
मिश्राश्वीदेव्यै २ कुब्जेश्वरीदेव्यै २ शुद्धेश्वरीदेव्यै २ त्रि
पुरसुंदरीदेव्यै २ सततेश्वरीदेव्यै २ ॥ त्रिकोरो ॥ सर
स्वतीदेव्यै २ लक्ष्मीदेव्यै २ कुवेराय २ ॥ विन्दु ॥ श्री

महालक्ष्मीदेव्यै २ विस्रवेस्कमलवापिन्यै २ श्रीदेव्यै २
 जगत्पुस्त्यै २ धनलक्ष्मीदेव्यै २ सिद्धिलक्ष्मीदेव्यै २ ॥
 ११८ ॥ आवाहनादि ॥ ॥ ततो अर्घ्यं कारयेत् ॥ अथ दिवाका
 ॥ मम शक्तिस्मृतिपुराणोक्तफलप्राप्त्यर्थं बहु धन धान्या
 न्यादिरत्नसुवर्णाद्यैश्च तत्सर्वसंपत्तिं सिद्धिं जय
 प्राप्तिं कामजायुषं रोगपतंतितं ज्ञानवृद्धिं काम
 अमुकवृत्तकर्माहुः श्रीमन्महालक्ष्मीस्मृतये इदम
 र्घं गृहानं स्वाहा ॥ अर्घ्यं यं देवदेसि पूरार्थं निव
 तारकः ॥ गृहानां र्घ्यं मेषादन्तं प्रसीद परमेश्वरि ॥ ॥
 शंखधो मुखेन पूजयेत् ॥ त्वं प्राप्ता गते त्वं विष्णुना पुष्ट

तं करे ॥ ^{तोऽवसे जाते} अमृतममनोत्वं नं पां च जन्म नमो स्तुते ॥ संजल दये
 के ॥ गोरीपूजा ॥ ॥ ओरी देवी नमस्तुभ्यं नगजा परमेश्व
 री ॥ दीर्घायुश्च पत्युं देही पावती ते नमो नमः ॥ ॥
 षोडशब्रं उच्यते विवेदनं ॥ ३ ॥ जेजे परमेश्वरी क० ॥ १६ ॥
 सकल पां प्रोजये ॥ जाप ॥ मूल ॥ विसु ॥ शिव ॥ अमृत
 र्घ्यं ॥ उग्रचरण ॥ कुबेर ॥ श्वेक देव ॥ ताद्ये अमिहो
 ले ॥ ॥ स्तोत्र ॥ मुक्तिदा जगतामाता सिद्धिप्रदा त्रि
 श्वती ॥ वैष्णवी धनदा चैव लक्ष्मीपंकज वासि
 नी ॥ शिवद ॥ अमदा स्वाहा मेधा सागर सर्व नवा ॥
 नंदिनी नारासी हों च तं भीनी माधवी प्रिया ॥ लक्ष्म्या

हृत्तानीनाली प्रागहृत्थायः पठेत् ॥ संसारे च न माता ज
सर्गलोके महीयते ॥ त्रिकालं नियतो भूत्वा वर्षमेकं
नुयः पठेत् ॥ राजा सुलभते पूजा तस्य लक्ष्म्याः पुत्रादतः
॥ नमस्ते श्रीरमा देवी ॥ नमोस्तु नताय ॥ धनदाय नस्तु
स्यं निधिपद्माधिपाय च भवेत्तु त्वत्पुता देन धनधान्या
दिसंपदा ॥ नमः शिवाय शा ॥ अन्नपूर्णे तदा पूर्णे शं
करप्रा नवहृत्ते ॥ ज्ञानवैराग्यगुणमिन्द्राद्यैर्भिक्षां दे
हि च पार्वती ॥ सहिष्यि महा माये चंडमुडविनाशि
निदुर्गा देवी नमस्तुभ्यं उग्रचरिते नमोस्तुते ॥ रत्नो
पक्षी स ॥ अथ धामायलिव्यासो हनुमान् श्रुवि

भीषण ॥ रूपचार्य पञ्चराम मार्कण्डेयाय ते नमः ॥ ५
तित्या नंदकासांतं निर्विकारं निरापमं ॥ व्योमा नीत
हरं शांतं भैरवं तं नमाम्यहं ॥ जगता नां गता पती ॥
नमस्ते कपिले देवी नमस्ते सुरपूजिते ॥ पवित्रां स
र्वदा धेनुं पूजितं च नमाम्यहं ॥ कौमारी सुयुगादूठा
रत्नांगी रत्नवासिनी ॥ शक्तिश्च विन्दुमुद्रां च कौमा
रीं च नमोस्तुते ॥ ईश्वरदेवो नमस्तु ॥ यथावान ॥
अत्र गंधादि ॥ ॥ दक्षिणा ॥ न्यूनानि हि तै यथा
पूजां यदि हि द्रुमं हि द्रुमं ॥ अत्र संपूर्णता मे न दः
क्षिणां प्रति गृह्यतां ॥ ॥ आरती चार्ये ॥ समस्त च

ऋचकेशी पुते देवीने वात्मिके ॥ आरात्रिक मिदं पुण्यं
गृहानमस्ते श्वरी ॥ ॥ चामरव्यजनं ॥ शीतवायुप्र
दं चैव दाहे च मुखसंपदं ॥ ॥ कमले गृह्यतां चैव
व्यजनं चैव चामरं ॥ ॥ पुंदक्षिणा ॥ यानिका
निचपापानि वृक्षहत्याहृतानि च ॥ तानि ता
नि विनश्यति प्रदक्षिणं पदे पदे ॥ ॥ वाह्यरा
प्रजा नृलोकं ॥ कथाश्रवणं वा ॥ दक्षिणं दा
नं ॥ दीपदानं चर्चनं वा पुण्याजिन्यर्चनं ॥ वातहृ
त्थाय पूर्वतः यथाशक्ति पूजनं ॥ बुद्धिजनसमस्तै

न ह्यनो जलीना पथेत् ॥ त्वंगतिलवभूतानां सः
सारे स्मिन् च वारिष्यता ॥ अंतश्चारेन भूतानां दृष्टा
त्वं परमेश्वरी ॥ भवेत्सार्धं वात्मानं भवभवभ
यापहा ॥ भूतिदं भजनं भूते भूते रूपा नमास्य
हे ॥ माता त्वं सर्वभूतानां देवानां शक्तिर्लभवान्
॥ आक्षीता भूतले देवी प्रशन्नो भव सर्वदा ॥ ॥
वाह्यरा प्रजा नृलोकं दक्षिणा ॥ विशुद्धिर्नम
॥ ॐ उदयतमः ॥ ॥ कलशाभि शेषा सिर्वा द पूर्णा
युद्धे ॥ कौमारी विशुद्धिर्नम ॥ सूर्य साक्षि ॥ का

अथ लक्ष्मीन्यासः॥ ॐ सं ^{श्री} रं दं भं श्रिये अस्त्राय फ
ट् ॥३॥ करसो धनं ॥ ॐ देव्यै अंगुष्ठाभ्यां नमः ॥ ॐ पद्मि
न्यै तर्जनीभ्यां स्वाहा ॥ ॐ विष्णुपत्न्यै मध्यमाभ्यां वषट्
॥ ॐ वरदायै अनामिकाभ्यां हुं ॥ ॐ कमलरूपायै कनि
ष्ठाभ्यां वोषट् ॥ ॐ सं रं दं भं श्रिये अस्त्राय फट् कर
तलपृष्ठाभ्यां फट् ॥ इति करंगन्यासः ॥ एवं हृदया
दि ॥ ॥ ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ऐं कमलवासिन्यै स्वाहा

